संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार
सत्यमेव जयते

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय
NATIONAL SCHOOL OF DRAMA

Third Year Students
present
A Devised Production

नगरी गरी

मार्गदर्शन :
शांतनु बसु

अभिमंच सभागार
रा.ना.वि. परिसर, नई दिल्ली

पाठ्य–सन्दर्भ:

1) फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ (नज़्म)
2) ज्यूडिथ बटलर (उद्धरण)
3) फ़्रीडा काहलो (उद्धरण)
4) मेरिलिन मुनरो एवं मैडोना के कथन
5) न्यूयॉर्क टाइम्स रिपोर्ट
6) आइस क्वीन–एना विंटॉर
7) ''एक दो तीन'' तेज़ाब (1988) से
8) मीडिया – युरोपिडीज़
9) सबीर हका, विनोद कुमार शुक्ल और मँगलेश डबराल की कविताएँ
10) स्तनदायिनी – महाश्वेता देवी
11) दि इकोनॉमिक टाइम्स से आलेख
12) ऑर नॉट टु बी – 'अ कलेक्शन ऑव सुसाइड नोट'– मार्क स्टिकण्ड

- कुछ अंश तृतीय वर्ष के छात्रों द्वारा लिखे गए हैं–

निर्देशकीय

मैं अक्सर सोचता हूँ। क्योंकि अधिकाँश मंच–सामग्री जो अभिनेताओं ने चुनी है, वो काफ़ी पहले ही तय हो चुकी होती है और अन्तिम संस्करण (रूप) बन चुका होता है, तो उनके लिए यह कहीं सहज हो जाता है। अभिनेताओं ने कामचलाऊ तौर पर कार्य के लिए 12 कूलर और लोहे के विशाल जाल स्थापित किए हैं, वे ऊँचाई से कूदे हैं, अस्थिर सीढ़ियाँ चढ़े हैं, उन्होंने ख़ुद को जलाया है, मिट्टी में लिथड़े हैं, तर–ब–तर हुए हैं, हर तरह की सामग्री में ख़ुद को मैला किया है, ईंट–पत्थरों को तोड़ा है उन्होंने, कीचड़ में लोटे हैं, टूथपेस्ट से अपने शरीरों को लेपा है, कचरे की बोरियों और सूटकेसों में अपना दम घोटा है, लोहे की छड़ों में अपने सिर धुने हैं, उन्होंने खरोंचें खाई है, ख़ुद को तबाह किया है और विजेता बन कर उभरे हैं, और यह प्रस्तुति तैयार की है। इसे सम्भव बनाने के लिए मैं हमेशा अभिनेताओं का आभारी रहूँगा।

नाटकः

नर नारी नगरी

प्रस्तुति में स्त्री और पुरुष– इन दो लिंगों के शहर के परिवेश में स्थान न होने की यात्रा को दर्शाया गया है। इसमें शहर में वर्ग व्यवस्था को इन दोनो लिंगों के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है।
वर्ग व्यवस्था जैसे ही अपने पाँव शहर में पसारती है, वैसे ही किसी एक राष्ट्रवाद रूप के लिए लोग मज़दूरी करना शुरू कर देते हैं। इस प्रक्रिया को उन सभी वर्गों में एक ही व्यस्था में नाटक में देखा जा सकता है– जहाँ नाटक फैशन रैंप के ऊपर खेला जाता है। रैंप, जो कभी शहरों के रास्ते, कभी कमरा, तो कभी मज़दूरों का तबेला बन जाता है। इस तरह शहर की माया को नाटक के रूप में ढाला गया है, जहाँ नाटक किसी भी कहानी को आगे ले कर नहीं बढ़ता, बल्कि अनेक कहानियाँ एक हो जाती हैं, एक कहानी अनेक में जीवंत हो उठती है।

इसी के साथ पुरुष और स्त्री के शरीर का शहर में वस्तु हो जाना और शरीर का बाज़ारीकरण हो जाना भी नाटक का एक सशक्त पक्ष है, जहाँ तमाम कॉस्मेटिक्स, ग्लैमर, रेड कार्पेट, चमकीले परदे और इन सभी के पीछे छुपी हुई विदारकता का रूदन नाटक में दिखाई देते हैं– जहाँ आप इस चमक को देखते हुए असहज महसूस कर सकते हैं। जानवरों के भीड़ में इंसान की आख़िरी खोज, नाटक के अंत में आपके आँखों में, यादों में रहने की अपेक्षा रखती है।
नर–नारी और नगरी– इन तीनों के बीच जो सम्बन्ध है, उसकी तलाश इस नाटक का मूल कथन है। एक शहर में आकर इंसानों के शरीर कैसे बदल जाते हैं, शरीर को शहर किस तरह से अपने अंदर समा पाता है या नहीं समा पाता है, और इस शहर और शरीर के द्वंद्व में मन–बुद्धि तथा हृदय का कैसे परिवर्तन होता है, इस सबकी पड़ताल में इस नाटक की कहानी का विस्तार होता है। जिसमें विभिन्न साहित्य के अंशों और अभिनेताओं द्वारा की गई आशु रचनाओं को मिला कर इस नाटक का प्रस्तुति आलेख तैयार किया गया है।

मंच पर:

अन्नुप्रिया: शबनम, रैवियोला, फ़्लोरा, कादम्बरी, चित्रकार, अजसुंदरी, स्नेहा

अप्सरा ख़ान: रेखा, जेनेट, मारिया, देवी काली, रासभसुंदरी, शंकरराव, डोमर

आलोक रंजन: रैम्बो, कैमरामैन, पंडित, ईंट बीनने वाला, राजनीतिज्ञ

भूषण संजयश्री पाटिल: ऑस्कर, सर्ज मार्शेनिकोफ, बबन

जुनैद राथर: एलेक्स, राजकुमार एडम, बर्तन बनाने वाला, बाइकर

ईशा पाण्डे: मटेरियल गर्ल

ख़ुशबू कुमारी: कायरा, कलावती, धोबिन, कृतिका, मधुमंजरी, उर्मिला, भेदसुंदरी

सेरिंड़ ल्हामो: रेखा, किट्टी, रैकेट, फ़्रीडा, राधा, बबुआ, प्लम्बर, जादूगर, अश्वसुंदरी

पाली फुकन: रेशमा, शनाया, सुमीता, टोटो, पोली मैडम, रॉकस्टार, टी वी मैकेनिक, मृगसुंदरी

पूनम दाहिया: जोजो डार्लिंग, फ़रमीना, रिया, वसंतसेना, शशि, लवंगलतिका, मछुआरन, नर्तकी, व्याघ्रसुंदरी

प्रतीक्षा शिवाजी कोे: जया, ईवा, मधुमालती, मंगल, रागिनी, बावर्चीन, वकील, शेवंता बाई, कुक्कुटसुंदरी

प्रेरणा जोशी: पैम, दुल्हन, मल्ल मोहिनी, भिखारन, बिजली मिस्त्री, फ़ौजी महिला, कपोतसुंदरी

पार्थ प्रतिम हज़ारिका: मोहन लाल

शाज़िया बतूल: रोज़, जोशुआ, नताशा, टीना, जेनी

अतिथि कलाकार: पंकज तंवर, कृष्णा अहलावत,

अनिता बिटालू, सलमा दानदिन (प्रथम वर्ष)

विशेष आभार: रिकेन ड़मले

मंच परे:

नाट्य: नूपुर चितले, गुंजन शुक्ला

दृश्यबंध–अभिकल्पना: भूषण संजयश्री पाटिल

प्रकाश अभिकल्पना: तमिलरसि. रा

वेशभूषा: अप्सरा ख़ान

भूषाचार गमन प्रशिक्षक एवं अनुभागीय नृत्यरचना : रूह शर्मा

शारीरिक प्रशिक्षक एवं अनुभागीय नृत्यरचना : पारस सोलंकी

संगीत संचालन: वाजिद अली

प्रक्षेपण: नितिन कुमार

मंच सामग्री: नूपुर चितले, गुंजन शुक्ला

रूप सज्जा: बब्बू ख़ान और टीम

झिल्ली रूपसज्जाकार: स्मृति दत्ता

पोस्टर और ब्रोशर: दीपक पांडे, निकिता भारती

मंच प्रबंधक: भूषण संजयश्री पाटिल

नेपथ्य सहायक: निकिता भारती

सह–शोध: अदिति गौतम, अभिषेक कौशल, शालिनी कुंडू, कंचन उज्जल, सारिका भारती, दक्षा प्रदीप शिरोडकर, चंदन कुमार

मार्गदर्शन:

शांतनु बसु

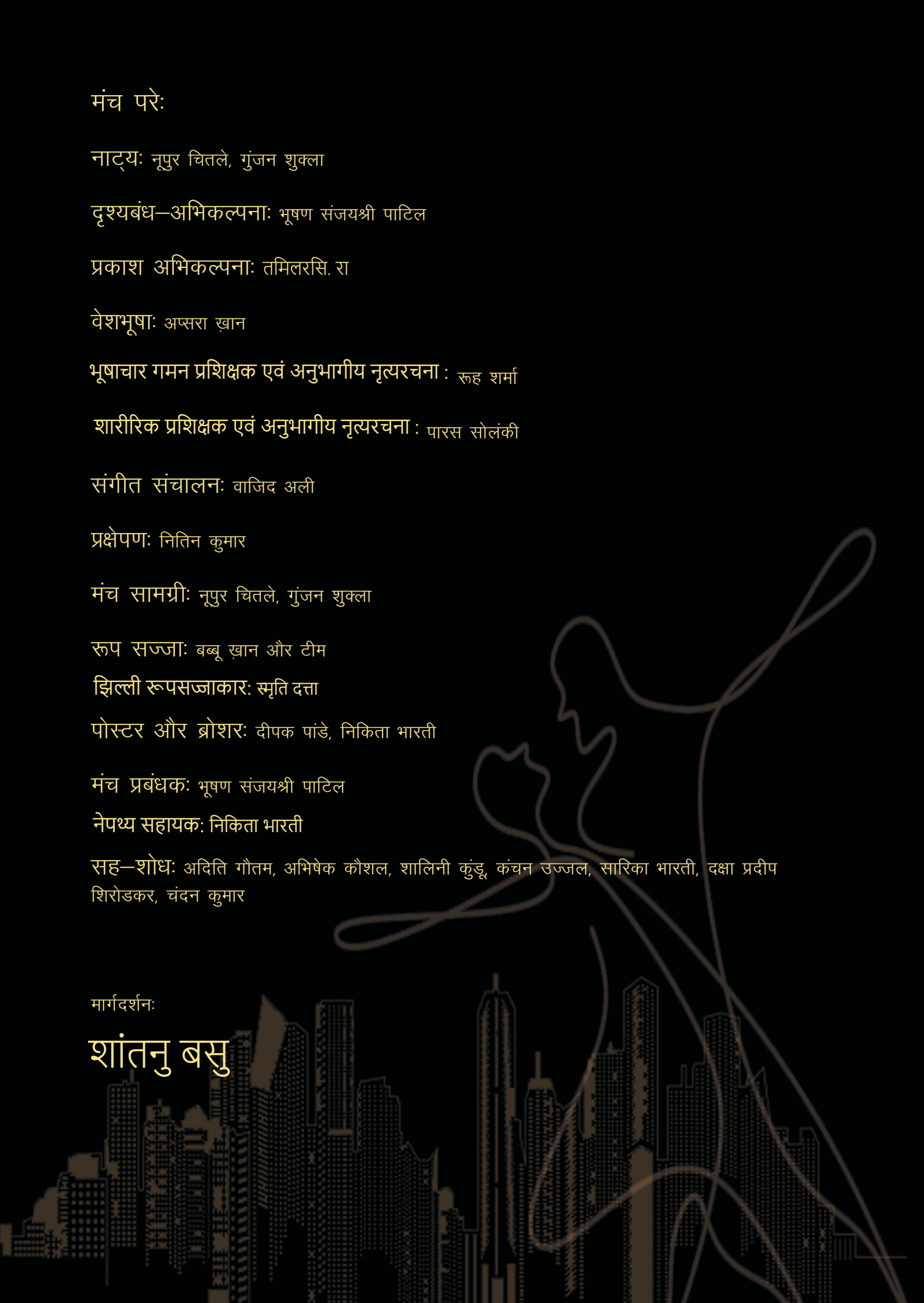

प्रस्तुति दलः

प्रस्तुति प्रबन्धकः पराग सर्माह

सहायक प्रस्तुति प्रबन्धकः उत्पल झा

प्रस्तुति सहायकः सुरिंदर, कविता

वेशभूषाः अंजु दुबे, दरम्यान सिंह, संजीव कुमार, मोनू, उषा देवी

दर्ज़ीः राजीव यादव, जनार्दन

प्रकाशः किरण कुमार शर्मा, राकेश सिंह, शीतल कुमार, मु. वाजिद

वीडियो और फोटोग्राफीः दीपक कुमार, पीयूष श्रीवास्तव, उत्कर्ष शुक्ला, भूपाल सिंह, सचिन कुमार

ध्वनिः के.सतीश, नितिन कुमार, मो. एहसान, सुनील सिंह

मंच–सामग्रीः अरुण कुमार मलिक, नीरज कुमार, शमशेर अहमद, मु. शाहिद

प्रस्तुति–सहाय़ः होशियार, किशोर

दृश्यबँध निष्पादन और मार्गदर्शनः

राम प्रताप, धर्म सिंह बिष्ट, राम अवतार मीणा, अशोक कुमार, अज़गर अली, शंभु प्रसाद, नज़र मोहम्मद, तक़मीर अहमद, फारुख़ अहमद, मुजीबुर्रहमान, धर्मवीर, ज़ियाउल हसन, भोलानाथ, रामबली पंकज, जयप्रकाश, मो. इसरार, गोविंद राम, विष्णु, हसमुद्दीन, सलीम, अयाज़, उमेश, प्रह्लादी

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय

तृतीय वर्ष छात्र

अन्नुप्रिया

अप्सरा ख़ान

आलोक रंजन

भूषण संजयश्री पाटिल

गुंजन शुक्ला

ईशा पाण्डे

जुनैद राथर

खुशबू कुमारी

सेरिंड॰ल्हामो

निकिता भारती

नूपुर चितले

पार्थ प्रतिम हज़ारिका

पाली फुकन

प्रतीक्षा शिवाजी कोते

प्रेरणा जोशी

पूनम दाहिया

शाज़िया बतूल

तमिलरसि. रा

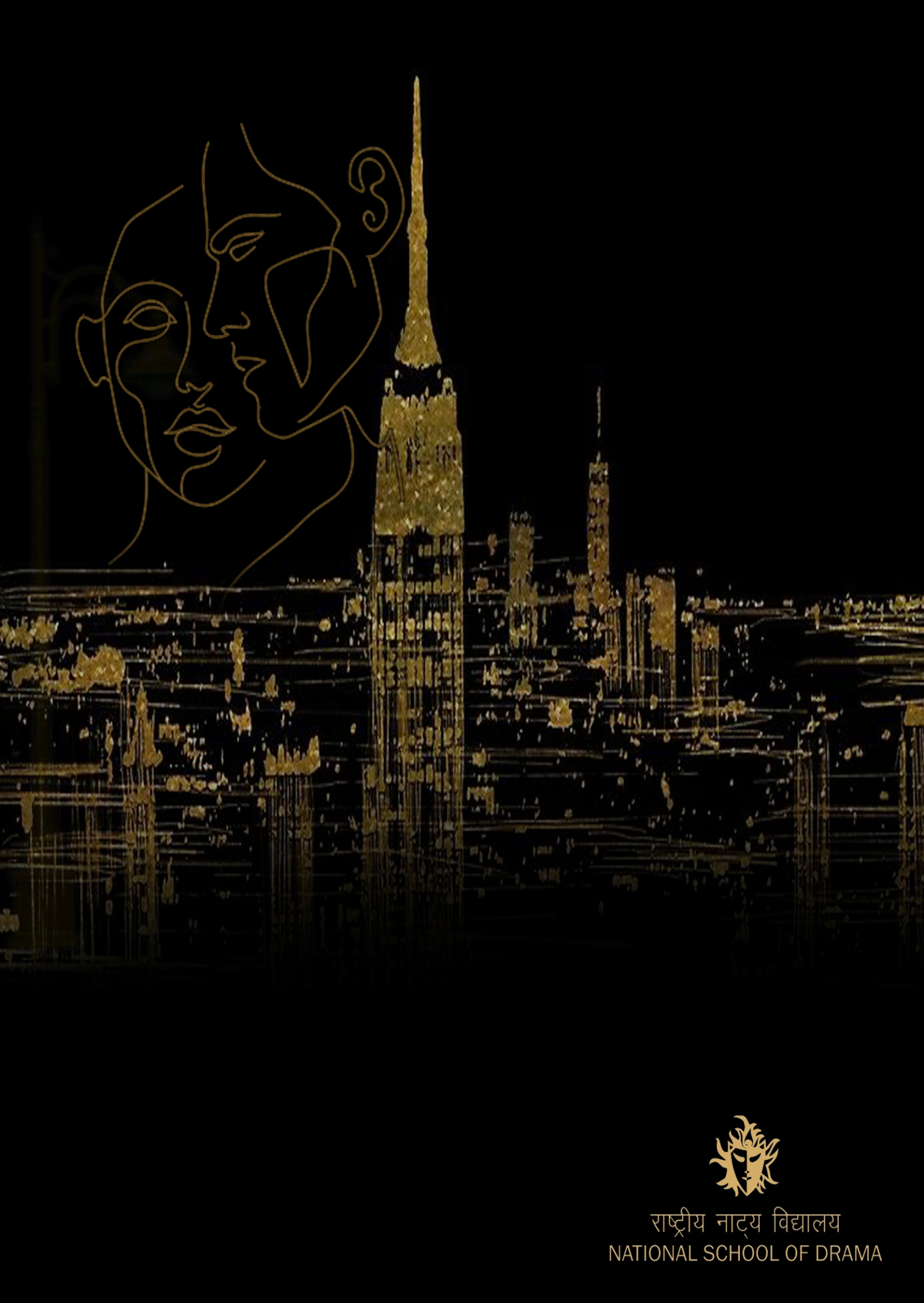

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय
NATIONAL SCHOOL OF DRAMA